बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा

1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-63 । सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार । अप्रैल, 2017 । मूल्य - 5 रूपए

अब समय हमारा है क्या आप हमें सुन रहे हैं ?

12 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय स्ट्रीट चिल्ड्रन दिवस मनाया जाता है। बढ़ते कदम और बालकनामा से जुड़े हुए स्ट्रीट चिल्ड्रन ने 11 अप्रैल को एक स्ट्रीट टॉक का आयोजन किया जिसमें चुने हुए बच्चों ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम पूर्व की झलकियां यहाँ प्रस्तुत हैं।

बालकनामा ब्यूरो

हमें यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने पिछले वर्ष अप्रैल 2016 में संगठित होकर यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों के सामने अपनी बातो को रखा था तथा सडक एवं कामकाजी बच्चों को हो रही समस्याओं के मुद्दे भी उठाए गए थे इस मीटिंग में भारत के विभिन्न राज्यों और नेपाल के 38 पूर्व एवं वर्तमान सड़क एवं कामकाजी बच्चों 21 लड़के और 17 लड़कियों ने दिल्ली में संगठित होकर यू. एन. जनरल के सामने अपने विचार रखे थे। यह किसी भी सड़क एवं कामकाजी बच्चे के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था इस कार्यशाला का लाईव कवर करने के लिए टीम बालकनामा को विषेश आमंत्रण मिला था जबकि दूसरे मिडिया कर्मियों को इस

शेष पृष्ठ 2 पर

चेतन की जिंदगी का सफर में ज्वलंत एक सवाल है कि वह कौन से तरीके हो सकते है जिससे अति पिछड़ा वर्ग और अति संपन्न वर्ग के बीच की खाई को पूर किया जा सके।

MESSAGE

Dear members of Badthe Kadam-street Children Federation and Balaknama Newspaper for and by Street Children,

I am extremely pleased to receive your invitation.I am so proud of your courage and initiative to organise this event.A lot of planning and thought has gone into making this event a reality .We always say that children should participate but rarely give children the opportunity to participate.This is definately your day , a day that has been recognised as your day internationally.I hope your voices will be heard by all concerned. I am certain that all of you will do well in this event " Street Talk by street connected children " .My best to wishes to all of you in all your future undertakings.

Yasmeen Shariff
Former Member
UNCRC

यह कहानी शम्भू की है जिसने अपने परिवार को चलाने के लिए अलग अलग तरह के कार्य किए और आज बालकनामा जो कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार है का संपादक है ।

मिलिए पूनम से जिसकी उम्र 16 साल है ने बहुत सारे सड़क से सम्पर्क में आए बच्चों को शोषण से निकाला । स्वयं भी सड़क के मुश्किलो का सामना किया बावजूद इसके कि वह बहुत अंतरमुखी थी ।

अखलेश 16 वर्षीय छला गया कई बार सड़को पर जिस पर भी उसने विश्वास किया । जिद थी उसकी इस जीवन से बाहर निकलने की। उसने खोजा अपना खुद का रास्ता अपने लगातार प्रयास और हौसले के दम पर ।

एक शक्तिशाली कहानी 14 वर्षीय शिव शंकर की जिसने देखी आशा की एक किरण रेलवे स्टेशन पर जब वह गुजर रहा था जीवन के सबसे मुश्किल दौर से ।

17 वर्षीय दीपक का अनंत संघर्षो से जूझता बचपन जिसने देखे जीवन के कई उतार चढ़ाव और आज बना हजारों सड़क एवं कामकाजी बच्चों की आवाज।

16 वर्षीय काजल के ज्वलंत दो सपने (कराटे सीखना एवं पढ़ना) जो आज भी जिंदा है हासिल करने को परिस्थिति ने जिसे न पूरा होने दिया . क्या आप करोगे इसके सपने को पूरा ।

17 वर्षीय ज्योति बनी हजारों बच्चों के लिए एक बड़ी मिसाल जो सड़क पर रहते हुए आ जाते है नशे की चंगुल में ।

अपनी परिवारिक समस्याओं के बीच उलझकर भी 13 साल की नीशा ने पढ़ने के सपने को पूरा किया और वर्तमान कक्षा सात में पढ़ रही है ।

17 वर्षीय मुसर्रत प्रवीण जिसने अपनी जिंदगी में हर मोड़ पर संघर्ष किया और यह साबित कर दिखाया की कोई भी काम मुश्किल नहीं होता बस जजबा होना चाहिए । इसी जजबे और हिम्मत से आज मुसर्रत प्रवीण कक्षा 10 में पढ़ाई कर रही है वह अपने जीवन में आगे बढ़ रही है वर्तमान में वह अपने जैसी लड़कियों को पढ़ने के लिए भी प्रेरित कर रही है।

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार !

सड़क एवं कामकाजी बच्चों की ओर से आप सभी को अंतराष्ट्रीय सड़क एवं कामकाजी बच्चो के दिवस के उपलक्षय में हमारी ओर से बहुत शुभकामनाएं ।

साथियों हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चो का अखबार बालकनामा एक नए अंक साथ सच्ची घटनाओं व अखबारो को लेकर प्रकाशित हुआ है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए यह बेहद खुशी की बात है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों को (यू.एन.सी. आर.सी) में मान्यता मिल गई है । और यह मान लिया है कि विश्व में सड़क एवं कामकाजी बच्चे होते है और उनकी निम्न समस्याएं है जिसका समाधना करना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

हम बच्चे बहुत अभारी है कि बच्चो को मान्यता मिली है अब हमें कोई अंदेखा नहीं कर सकेगा और कुछ बेहतर किया जा सकेगा ।

इसी को लेकर हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे ला रहे हैं (अब समय हमारा है क्या आप हमें सुन रहे हैं) और कुछ ऐसे संघर्ष से जूझती सच्ची कहानियां ।

आशा करते हैं कि आपको इस बार का अंक पसंद आएगा आपकी प्रतिक्रियाएं ऊपर लिखे पते पर आवश्यक भेजने का कष्ट करे।

संपादकीय टीम

पुल के नीचे से गायब हो जाते हैं हर साल कुछ बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

बिहार और राजस्थान से मजदूरी करने दिल्ली आते है है बच्चे अपने माता पिता के साथ। बच्चों के माता पिता के पास इतना पैसा नही होता है कि वह एक सुरिक्षत घर में रहकर गुजारा कर सके इसलिए वह पुल के नीचे ही रहकर अपना गुजारा करते है। पत्रकार को पता चला कि बच्चे ठंड शूरू होने से एक महिना पहले ही पुल के नीचे आने लगते है। इसी बीच अभी हाले ही में वहां से दो बच्चे गायब हो गए। पत्रकार ने बच्चों के माता पिता से पूछा कि बच्चे कैसे गायब हो गए। माता पिता ने बताया कि हम लोग दिनभर काम करते रहते है इसलिए हम बहुत थक जाते है जब रात को सोते है तो कुछ भी पता नही चलता है कि रात में क्या हुआ। पत्रकार ने पूछा कि आप लोगो ने पुलिस थाने में इसकी शिकायत दर्ज कराई कि नहीं? माता पिता ने बताया कि हम लोग थाने में शिकायत दर्ज कराने के लिए गये थे लेकिन पुलिस वाले हमारी बात नहीं सुनते हैं। वह हमसे कहते हैं कि तुमलोग अपने बच्चों का खुद तो ध्यान रखते ही नही हो घटना होने तक इंतजार करते हो और जब कोई तुम्हारे बच्चों को उठाकर ले जाता है तो रोते हुए पुलिस वालों के पास आ जाते हो। और कहते हैं चलो यहां से भागो। पत्रकार ने जब इस बारे और दूसरे बच्चों से बातचीत किया तो पता चला कि हर एक साल में दो से तीन बच्चे गायब हो जाते है। चौंकाने वाली बात यह है कि इस बारे में अब तक पता नही चल पाया है कि कौन है यह लोग जो बच्चो को अगवाह करके ले जाते हैं और चोरी अगवाह करने के बाद उस बच्चे के साथ वह क्या दुर्व्यवहार कर रहे हैं।

नशे में धुत अपने वस्त्र उतारकर करते हैं हंगामा.. पढ़ते बच्चे हो रहे हैं परेशान

बालकनामा ब्यूरो

लोरेन्स रोड की झुग्गी झोपड़ी में लगभग एक हजार से 1500 सौ तक लोग रहते हैं। यह लोग पुरे दिन अपने बस्ती में जुआ खेलते रहते है। जिन बच्चों की घर के स्थिति ठीक नहीं है उन बच्चों को संस्था के कार्यकर्ता पढ़ाने आते हैं तभी शाम को सभी बच्चे पढ़ाई करने के लिए बैठते है वहां के आसपास रहने वाले लोग जुआ खेलना शुरू कर देते है। आपस में अश्लील बात बोलते रहते है।

बच्चों ने बताया कि भईया हम सभी बच्चों को पढ़ाई करने में बहुत परेशानी होती है यह लोग शराब पीते है एवं बहुत चिल्लाते है। जब हम बच्चे इन से बोलते है कि चाचाजी आपलोग अभी जुआ खेलना बंद कर दो बाद में खेल लेना अभी हम बच्चे पढ़ाई कर रहे है। वह लोग बोलते है कि तुम लोग पढ़ाई करके क्या करोगे? तुमलोग भी हमारे तरह जुआ खेलोगे पढ़ाई करने से कुछ नही होता है। इतना ही नही कभी कभी यह लोग बहुत शराब पीकर जुआ खेलते है तो हम बच्चों के सामने अपने वस्त्र भी उतार देते है। बच्चे अपने मात पिता से बोलते है तो उनके मात पिता से भी लड़ाई करने लग जाते है। वह सभी लोग बोलते है कि यह तुम्हारी जमीन नही है जो तुम लड़ाई कर रहे हो यहां पर मैं भी रहता हूं जो मेरा मन होगा मैं करूंगा जिसको जो करना है वह कर ले। इससे मुझे कोई फर्क नही पड़ेगा।

पत्रकार से बच्चों ने अपनी समस्या बताते हुए कहा कि यह लोग यहां जुआ तो खेलते ही है लेकिन इसके साथ साथ नशीले पदार्थ का सेवन करके वह प्रतिदिन बच्चों के सामने नशे में धुत होकर अपने वस्त्र तक उतार देते है। इसलिए हम बच्चे चाहते है कि इस समस्या का जल्द समाधान हो।

अब समय हमारा है, क्या आप हमें सुन रहे हैं?

पृष्ठ 1 का शेष

कार्यक्रम में आना मना था यह कार्यक्रम कंसोर्टियम फोर स्ट्रीट चिल्ड्रन और प्लान इंडिया द्वारा आयोजित किया गया था और चाइल्डहुड एन्हांस्मेंट थ्रू टेजनिंग एण्ड एक्शन ;चेतना द्ध ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों के संबंध में तकनीकी सहयोग प्रदान किया था हम आपको बताएंगे कि इस कार्यक्रम में क्या हुआ और बच्चों द्वारा कहे गए वे वास्तविक कथन क्या थे हम सभी निमार्ताओं से यह अपील करेंगे कि बच्चों द्वारा गई इन महत्वपूर्ण टिप्पणियों पर ध्यान दें।

● सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने यू. एन.सी.आर.सी के सदस्यों के सामने इन मुद्दो को उजागर किया था

● सड़क एवं काकमाकजी बच्चे के विश्व के सबसे कमजोर वर्ग में गिने जाते हैं उन्हें अपने रोजमर्रा के जीवन में बहुत सारे खतरों का सामना करना पड़ता है शहरों की भागमभाग भरे जीवन में उन्हें दो वक्त की रोटी के लिए बहुत मेहनत करनी पडती है और कोई भी उनकी ओर देखने वाला भी नहीं होता है रहने से लेकर काम करने वाली जगह तक उनका शोषण होता है अपने अस्तित्व के लिए इन बच्चों को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है

● इस कार्यशाला में बच्चों ने अपनी सुरक्षा संबंधित निम्नलिखित मुद्दे उठाए

● हमें दूसरों के द्वारा पीटने के लिए छोड़ दिया जाता है काम करने कम लिए मजबूर किया जाता है और यौन शोषण का सामना करना पडता है।

● छुट्टियों के दौरान बडे घरों के बच्चे घूमने फिरने जाते हैं और हम अपने परिवार का सहयोग करने के लिए काम पर जाते हैं।

● हम नशीले पदार्थों और समूहों की हिंसा के शिकार हो जाते हैं समाज द्वारा हमें अनदेखा किया जाने के कारण हम नशीले पदार्थों के आदी हो जाते हैं।

● हम पुलिस की हिंसा के शिकार होते हैं पुलिस हमें डंडो से पीटती है और हमारी बात नहीं सुनती है।

● पुलिस का व्यवहार हमें हठी बना देता है और हमें अपराधों की दुनिया धकेलता है।

● हमें लैंगिक हिंसा और अन्याय का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए आम बात है

● हमें अनदेखा किए जाने और हमारा शौषण होने के कारण कभी कभी हमारे मन में आत्महत्या करने के विचार भी आते हैं।

● गैर सरकारी संगठनों की अनुपस्थिती में हमें विक्लांगताएनागरिकता और पहचान को लेकर भी बहुत सारी समस्याओं का समना करना पड रहा है।

● शारीरिक दंड के चलते हम स्कूल छोड़ देते हैं और समुदाय की एकजुटता के अभाव में हमें अपराध की दुनिया में धकेल दिया जाता हैं।

● हमें काम करना पड़ता है क्योंकि हमें खेलने का अवसर नहीं दिया जाता है फसल खराब होने ए स्थानांतरण होने और डॉक्टर द्वारा हमारी कोई सहायता न करना ये सब हमें समाज से अलग बनाते है

● बेहद खुशी की बात है कि बच्चों द्वारा रखी गए इन सभी मुद्दो को यू.एन.सी. आर. में सरहाना देते हुए यह मान लिया गया है कि विश्व में सड़क एवं कामकाजी बच्चे होते है और उनकी निम्न समस्याएं हैं जिसका समाधना करना बहुत ही महत्वपूर्ण है

इस बारे में जब बालकनामा के पत्रकारों ने सड़क पर रहने वाले बच्चो को यह सूचना दी और उनकी अभिलाशा को सुना।

● स्टेशन पर रहने वाले बच्चो ने बताया कि अगर हम बच्चों की चलती समस्याओं के मुद्दो पर गौर किया गया है तो अब तो यह मुम्किन है कि हम बच्चों की भी गणना की जा सकेगी और उनके मुताबिक हम बच्चों के पुर्नवास के लिए नियुक्त यौजनाओं की सेवाएं हम बच्चों तक पहुंचेगी।

● कहना था कि अगर ऐसा हुआ है तो अब तो हमारे बारे में लोग जान सकेंगे जिसके आधार पर शायद हम बच्चों को एक नई पहचान भी मिलेगी और लोग हमारा सम्मान करेंगे

● अब हम जानते हैं कि कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकेगा कि सड़क पर रहने वाले यह बच्चे कहां से आए है अब हम भी खुलकर जी सकते हैं हम भी समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

● अब तक हम बच्चों को अनदेखा किया जा रहा था पर अब ऐसा लग रहा है की किसी भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों की समस्या पर जरूर एक्शन होगा।

● सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए स्पेशल नाईट शेल्टर होम की भी सुविधा कराई जा सकेगी।

● सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए स्पेशल वोकेशनल ट्रेनिंग के इन्स्टीयूट भी हो जिसमें हम बच्चे ट्रेनिंग ले सकें।

अंधविश्वासी नुस्खा अपनाते लोग

बच्चे बढ़ती खुजली से परेशान

बातूनी रिपोर्टर गुड्डी रिपोर्टर विजय कुमार

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ श्रम विहार में बसी एक झुग्गी बस्ती में यहां के कुछ बस्ती के लोगो का मानना है कि अगर किसी बच्चे को खाज खुजली होती है तो बच्चे को गंदे नाले में नहला दो तो खाज खुजली की बिमारी जड़ से खत्म हो जाती है। किसी भी बच्चे को वहां खाज खुजली होती है तो बच्चों को गंदे नाले में कम से कम दो घंटे तक नहाना होता है। यहां जब बढ़ते कदम और बालकनामा की पत्रकार गुड्डी ने यहां के लोगो से बात की तो रानी देवी का कहना था कि यह पूरा नाला लखनऊ की सभी कलोनियों के गटर से जुड़ा हुआ है। आप समझ सकते है कि यह नाला बच्चों के स्वास्थय के लिए कितना खतरनाकं हो सकता है। राजू प्रजापति का भी यह कहना था कि कई बार हम लोग यहां की झुग्गी वासियों को समझाते हैं तो वह नहीं मानते हैं। उनका कहना है हमें खाज खुजली होती है तो हम भी इसी नाले में नहाते थे। तो जब हमारे बच्चों को खाज खुजली होती है तो हम भी अपने बच्चों को इसी नाले में नहला देते हैं जिससे उनकी खुजली खत्म हो जाती है। 13 वर्षीय राहुल का कहना है कि जब हमें खाज खुजली हो जाती है तो हमारे माता पिता हमें जबरन ं इस गंदे नाले में नहाने के लिए कहते है। नहाते वक्त हमारे मुंह में मल और उसकी बदबू तथा गंदे पानी की गंदगी आती है और कई बार बच्चे बेहोशी हालत में मिलते है। लेकिन बच्चे क्या करे ? बच्चों ने बताया कि जब हम गंदे नाले से नहाकर निकल आते है तो साफ पानी से 1 घंटे तक नहाते है जिससे हमारे शरीर से नाले की बदबू दूर हो जाती है। 32 वर्षीय राम कुमार जी का कहना है कि कई बार बच्चो को

नहाने के बाद बहुत खतरनांक बिमारियों का सामना करना पड़ा है। लेकिन बच्चो के माता पिता इस बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते है। यहां की सोंच है कि गंदे नाले या गंदे पानी में नहाने से खाज खुजली जड़ से खत्म हो जाती है।

काम के बोझ से दबता बचपन

बातूनी रिपोर्टर श्रवन रिपोर्टर चेतन

8 वर्षीय श्रवन गैरिज की दुकान पर मोटर मकेनिक का काम करता है। पत्रकार ने श्रवन से पूछा कि आप तो बहुत छोटे हो फिर आप कैसे काम कर लेते हो?

श्रवन ने पत्रकार को बताया कि मेरे घर की स्थिती ठीक नही है इसलिए मैं काम करता हुं साथ ही मेरे माता पिता भी लोरेन्स रोड अंडर पास के नीचे खड़े रहते है और जो भारी रिक्शा आता है तो उस रिक्शे को धक्का लगाकर ऊपर ले जाते है। इस काम के 20 से 30 रुपए मिल जाते है और कभी तो कुछ भी कमाई नही होती है। इसलिए वह मजबूर होकर गैरिज में काम करता है।

उसने बताया गैरिज में काम करते वक्त उसे बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है जो गाड़ियां वह सही करता है उनके पूर्जे बहुत भारी होते हैं। वह इन पूर्जो को उठा नही पाता है। इस गैरिज की दुकान पर पुलिस वाले भी आते है जो अपनी गाड़ी सही करवाते है लेकिन वह उसे देखकर भी अनदेखा कर देते है। उसका कहना है कि वह अपने परिवारीक स्थिती ठीक न होने की वजह से यह काम करता है। उसका भी एक सपना था कि पढ़ाई करके अच्छा काम करेगा पर वह काम के चलते पढ़ाई नही कर पा रहा है। अगर उसके माता पिता का लगा बंधा काम होता तो शायद उसे गैरिज की दुकान पर काम नही करना पडता और वह भी दूसरे बच्चों की तरह स्कूल में पढ़ाई कर रहा होता।

कबाड़ा बीनने वाली लड़कियों को अपने जाल में फंसाकर करते हैं अश्लील हरकत

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा पत्रकार को लड़कियों ने गंभीरता से सूचना दी कि मार्किट में 5 लड़के हैं जो कबाड़ा बीनने वाली लडकियों को अश्लील नजरो से देखते हैं और गंदी गंदी बाते करते हैं। वह लड़के जिन लड़कियों पर अपनी नजर रखने लगते हैं तो किसी तरह अपने जाल में फंसाते है। कबाड़ा बीनने वाली लड़कियों के साथ वह नए नए पैंतरे अपनाते है ताकि उन्हें अपने जाल में फंसा सके। वह उन्हें कहते हैं कि यहां कबाड़ा क्यों बीनते हो? इस काम के तुम्हें कितने पैसे मिलते है और तुम्हें हर दिन कितने पैसों की जरूरत होती है। जितने पैसे तुम हमें बाताओगी हम तुम्हें उतने ही पैसे दे देंगे। पर तुम में से कोई भी लड़की मार्किट में कबाड़ा नही बीनोगी। इतना सुनते ही लड़कियां उन लड़को से सवाल भी करती हैं कि आप हम लड़कियों की मदद क्यों करना चाहते हो? तो जवाब में वह लड़के कहते हैं कि हम आपकी मदद नही कर रहे हैं लेकिन तुम लोग कबाडा बीनते हो तो हमें अच्छा नही लगता है। और इसी

तरह वह लड़कियों को अपने जाल में फंसा लेते हैं। फिर लड़के उन्हें खाने पीने का लालच देते है। जब वह लड़कियां उन लड़कों की बातो में आने लगती है तो उन लड़कियों के पास जाकर वह लड़के उनके साथ गलत एवं अश्लील हरकत करते हैं। उनके व्यक्तिगत अंगो को स्पर्श करते हैं और जब वह उन लड़को से बोलती हैं आप यह हमारे साथ क्या रहे हो ? तो वह लड़के बोलते है कुछ नही कर रहा हूं चुप रहो अगर हमें अपने साथ ऐसा करने से मना करोगी तो हम तुम्हें पैसे नही देंगे। इन लड़को ने इस तरह के हथकंडे अपनाकर अब तक लगभग नौ लड़कियों को फंसाया है।

पत्रकार ने सभी लड़कियों से बातचीत की और उनके माता पिता को भी समझाया कि आप अपनी लड़कियों को अकेले कबाड़ा बीनने के लिए मत भेजो। और लड़कियों को सलाह देते हुए चाईल्ड हेल्प लाईन नम्बर 1098 के बारे में बताया कि आप इस नम्बर पर उन लड़को के बारे में शिकायत कर सकते है तथा पुलिस को भी बता सकते है।

और अगर आप अपनी शिकायत को गुप्त रखना चाहतें हैं तो पुलिस या चाईल्ड लाईन में आपका नाम और पता गुप्त रखा जाएगा तथा उन लड़को को पकड़कर सजा भी दी जाएगी। ऐसा करने से वह लड़के आगे से किसी भी लड़की को वह मोहरा नहीं बना सकते।

धमकी के साथ बच्चों की करते हैं खुली पिटाई

बालकनामा ब्यूरो

15 वर्षीय बालिका जो अपने परिवार के साथ झुग्गी में रहती है। परिवार के गुजर बसर करने के लिए करोल बाग में पटरी पर चार्जर व एयरफोन बेचने का काम करती है साथ में बालिका के माता पिता भी यही काम करते है। बालिका का एक बड़ा भाई है जो शादी करके अपने माता पिता से अलग रहता है। बालिका जिस झुग्गी में रहती है वहां पर हमेशा लड़ाई झगड़ा होता रहता है।

एक दिन की बात है किसी वजह से

बालिका के माता पिता से उसके पड़ोसी से लड़ाई हुई और मारपीट भी होने लगी। बालिका अपने माता पिता को उस लड़ाई में से बाहर निकलने की कोशिश करने लगी लेकिन वह लोग बालिका के माता पिता को बुरी तरह पीट रहे थे और उन्होनें बालिका को भी पीटना शुरू कर दिया। बालिका का कहना है कि जिस वक्त मुझे वह लोग मार रह थे उस वक्त पुलिस वाले भईया भी वहीं पर मौजूद थे। उसने पुलिस वाले भईया से मदद मांगी पर पुलिस वाले भईया ने उसकी मदद नही की वह खड़े खड़े तमाशा देखते रहे। जिन लोगो ने उसके साथ मारपीट की वह पुलिस वाले भईया के सामने ही उसे धमकी भी दे रहे थे कि अपने भाई बहनों को सम्भालकर रखना नही तो बहुत मंहगा पड़ेगा। बालिका ने पत्रकार को बताया कि हमारी झुग्गी में जब भी किसी भी व्यक्ति की इन्हीं लोगो से लड़ाई होती है तो ऐसे ही वह सभी को धमकी देते है। बस्ती में रह रहे लगभग 2 बच्चे भी गायब हुए थे जिनका शक इन्हीं लोगो पर है जो खुलेआम मारपीट करके बच्चों को धमकी देते है। बस्ती वालो का कहना है कि यह लोग छोटे बच्चों का अपहरण कर लेते है और किसी दूसरी जगह पर ले जाकर उनके माता पिता से फिरोती मांगते है जितना फरोती मांगते हैं अगर उतना नही देते है तो बच्चों को नुकसान पंहुचाने की धमकी देते हैं। इस डर की वजह से कोई भी बस्ति वाला उनके के खिलाफ कदम उठाने की कोशिश भी नहीं करता है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

छोटी सी उम्र में ही कर देते हैं बच्चों की सगाई

बालकनामा ब्यूरो

कुछ खास जाति के लोग बच्चों के जन्म के कुछ दिन बाद ही उनकी सगाई कर देते है और बदले में लड़के वाले लड़की वालो से दहेज भी उसी सगाई के वक्त ले लेते है। पत्रकार एक ऐसी ही 17 वर्षीय बालिका से जाकर मिला जो इस घटना की शिकार हो चुकी हैं।

पत्रकार ने उस बालिका से पूछा कि आपकी भी सगाई बचपन में ही कर दी गई थी ? उस बालिका ने बताया कि हां दीदी मेरी सगाई भी बचपन में ही हो गई थी और उसकी सजा मुझे अभी मिल रही है। मेरे माता पिता ने जिस लड़के के साथ मेरी सगाई की थी वह किसी और लड़की से प्रेम करता है वह मुझसे बात तक नही करना चाहता है। फिर भी मेरे माता पिता उसी लड़के के साथ शादी करना चाहते है। मुझे भी वह लड़का पसंद नही है पर क्या करे हमारी जाति के कुछ ऐसे कड़े नियम है जिसका उलंघन करने से माता

पिता समझते है कि उनकी इज्जत नहीं रहेगी। इसलिए जाति के सभी नीयमों को उनके माता पिता को पालन करना पड़ता है अगर लड़का बड़ा होकर शादी से इंकार कर देता है तो उसके माता पिता लड़की के घर वालो से ओर पैसो की मांग रखते है क्योंकि वह बोलते है कि जब सगाई हुई थी उसी वक्त से हमारा बेटा तुम्हारा दमाद हो गया था और उसके पालन पोषण करने में जो पैसा खर्च हुआ है उसका पैसा कौन देगा?

इसी तरह लड़के वाले लड़की के माता पिता से पैसों की मांग करने लगते है अगर माता पिता किसी भी वजह से रिश्ता तोड़ते हैं तो लड़की वालो से इसी तरह बोलकर पैसे मांगते है। इसलिए हम लड़कियों को मजबूरी में उस लड़के से शादी करने पड़ती है और पूरी घर की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है इतना ही नही जब रात को हमारे पति शराब पीकर घर आते है जो वह काम बोलते है वो काम न करने पर बहुत मारते है। घर की जिम्मेदारी तो सम्भालनी ही पड़ती है साथ साथ पति का भी आत्याचार झेलना पड़ता है।

बच्चे रेल गाड़ी से निकालते हैं कोयला और सिमेंट

बालकनामा ब्यूरो

शकूर बस्ती में एक रेलवे स्टेशन है जहां पर ज्यादातर कोयले और सिमेंट की रेल गाड़ियां आती है। वह रेल गाड़ी शकूर बस्ति के रेलवे स्टेशन पर दो से तीन दिन तक रूकी रहती है। इस बात का फायदा शकूर बस्ति में रहने वाले कुछ बच्चे उठाते है। वह बच्चे सिमेंट साईडिंग पर जाकर रूकी हुई रेल गाड़ी में चढ़ जाते है एवं कोयले और सिमेंट को अलग अलग थेलों में भरकर होटल या ढ़ाबे पर बेच देते है। होटल व ढ़ाबे वाले भईया एक

किलो सिमेंट पर बच्चों को 20 रुपए देते है और कोयला तो बहुत ही कम पैसों में खरीदते है उसके केवल पाचं से दस रुपए बच्चों को दे देते है। पत्रकार इन बच्चों से जाकर मिला और पूछा कि आप सभी बच्चे कोयला और सिमेंट रेल गाड़ी में से क्यों निकालते हो यह ठीक बात नहीं है। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि उसके माता पिता के पास इतने पैसे नही है कि वह उनकी जरूरतों को पूरा कर सके। जैसे कि इन बच्चों को पहनने के लिए कपड़े और खाने के लिए कोई चीज नहीं मिलती है। उनके माता पिता सिर्फ रोटी खिलाते है लेकिन उन बच्चों को कपड़े और खाने की चीजों का मन करता है। इसलिए यह बच्चे कोयले और सिमेंट रेल गाड़ी से निकालकर दुकानो में बेचने का काम करते है जिससे उन्हें थोड़े बहुत पैसे मिल जाते है और वह अपनी जरूरत का सामान तथा कुछ खाने के लिए चीज खरीद लेते है।

पुल के नीचे रहने वाले बच्चों को हो रही है पानी की किल्लत

बातूनी रिपोर्टर राम सिंग रिपोर्टर शम्भू

पत्रकार ने मूलचंद पुल के नीचे रहने वाले सभी बच्चों को साफ सफाई के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि आप बच्चों को अपने शरीर को साफ सुथरा रखा करो नही तो गंदगी की वजह से आपके शरीर में किटानु फैल सकते है और आप बच्चे बिमार भी पड़ सकते है। यह बात सुनते ही बच्चों ने पत्रकार को अपनी समस्या बताई कि भईया हम बच्चे कैसे अपने शरीर को किटानू फैलने से रोक सकते है। यहां किसी चीज की सुविधा नही है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि यहां सबसे ज्यादा पानी की परेशानी है हमारे आस पास कहीं पानी नही मिलता है हम सभी बच्चे पानी के लिए तीन किलो मीटर पैदल जाते है। वहां पर एक दिल्ली जल बोर्ड कि पाईप लाईन टूटी हुई है वही पर हम बच्चे नहाते धोते हैं लेकिन उसका पानी बहुत गंदा है। उस पानी में से बहुत गंदी बदबू भी आती है। पानी की असुविधा

के कारण हम गंदे कपड़े जल्दी नहीं धोते है बल्कि कपड़े पहने हुए ही नहा लेते हैं ऐसा करने से हम बच्चे आसानी से खुले में नहा भी लेते हैं और हमारे कपड़े भी साफ हो जाते है। सभी बच्चे रोज सिर्फ पानी के लिए तीन किलो मीटर पैदल नहीं जा सकते इसलिए वह बच्चे वहां पर चार पांच दिन का नागा करके वहां नहाने जाते है और कुछ बड़ी लड़कियां भी बच्चों के साथ नहाने के लिए जाती हैं। सभी पुल के नीचे रहने वाले बच्चे चाहते है कि जिस तरह रैन बसेरों में सरकार द्वारा पानी भेजा जाता है इसी तरह पुल के नीचे रहने वाले बच्चो को भी पानी मिल जाए तो बच्चों को इतनी दूर न जाना पड़े।

बहला फुसलाकर लाते है बच्चों को दिल्ली, करवाते हैं काम

बालकनामा ब्यूरो

15 वर्षीय बालक ने बताया कि मैं गांव में पढ़ाई करने के लिए जाता था लेकिन मेरे माता पिता को लालच दिया कि मैं आपको बच्चे को दिल्ली ले जाकर पढ़ाई करवाऊंगा और साथ ही साथ पैसे भी दूंगा। यह बात सुनते ही मेरे माता पिता ने मुझे दिल्ली भेज दिया। दिल्ली आने के बाद उसका मालिक उसे स्कूल भेजने के बजाए उस बच्चे से सुबह आठ बजे से लेकर रात को दस बजे तक काम करवाता है। 16 साल बालक ने बताया कि जब से हम बच्चे दिल्ली आये है तब से अलग अलग प्रकार के काम करते है जैसे पानी बेचना होटल या ढ़ाबो में काम करना पड़ता है। बच्चों ने बताया हमें पानी का ठेला ले जाने में बहुत परेशानी होती है ठेले को धक्का लगाते वक्त छाती में तेज दर्द होता है क्योंकि उस ठेले पर 100 लीटर से भी ज्यादा पानी होता है। ठेले को सड़क पर ले जाते वक्त चढ़ाई भी आती है तो बच्चों से ठेला सम्भाला नहीं जाता है। ठेले पर बच्चे

दो रूपया ग्लाश पानी बेचते है कुछ लोग पैसे भी नही देते है। इसलिए हम बच्चों की तंख्वाह में से पैसे काट लेते है। जब बच्चे अपने माता पिता से फोन पर बात करते है तो उनका मालिक बोलता है कि अपने माता पिता से कुछ भी मत बताना कि मैं तुमलोग को मारता पीटता हूं अगर बोल दिया तो महीने की तंख्वाह भी नही दूंगा। इस डर से यह बच्चे कुछ नही बोलते है। इन बच्चों का मन अपने गांव वापस जाने को करता है लेकिन उनका मालिक उन्हें उनके गांव वापस नहीं जाने देता हैं।

जूता पॉलिश करके कमाते हैं दो पैसे

बालकनामा ब्यूरो

करोल बाग में चार बच्चे ऐसे है जो रोज सुबह सात बजे से लेकर रात को आठ बजे तक जूता पोलिस करने का काम करता है। इन बच्चों से पत्रकार करोल बाग मेट्रो स्टेशन पर मिला और पूछा कि आप लोग स्कूल जाते हो ? 11 साल के विश्वास ने बताया कि भईया हम बच्चे स्कूल नही जाते है हम दिनभर जूता ही पोलिस करते है। हम बच्चों को पढ़ाई करने का मन करता है पर हम पढ़ाई नही कर पा रहे है। हमारे माता पिता काम पर जबरदस्ती भेजते है अगर हम बच्चे एक दिन भी काम पर नही आते है तो बहुत मारते है। इसलिए हम बच्चे मार्किट में इधर उधर घूम घूमकर जूता ही पोलिस करते है। 9 वर्षीय सचित ने बताया कि हम बच्चे लोगो का जूता पोलिस करते है तो कभी कभी पैसे भी नही देते है। मारकर भागा देते है और बोलते है कि यह कोई दुकान नही है जो मुझे पैसे देने पड़ेंगे चलो भागो। वह हमें इसी तरह धुतकरते हैं और बहुत गुजारिश करने के बाद जहां एक जूता पोलिस करने का जहां 40 रुपए बनता है वहां लोग हमें 10 से 20 रूपय बड़ी मुश्किल में देते हैं बच्चों ने बताया कि कभी कभी एम.सी.डी वाले भी हड़कम मचा देते है। और जो भी हमारे पास सामान होता है वह भी छीन लेते है और उस दिन घर जाने पर माता पिता भी बहुत गुस्सा होते है कि सामान छोड़कर कहीं खेल रहा होगा इसलिए एम सी डी वाले सामान उठाकर ले गये। अगर हम बच्चे अपना सामान एम. सी.डी वापस लेने जाए तो जाए कैसे इतने का सामान नहीं ही जितने वैसे उस सामान वापस करने पर लेते है इसलिए हम अपना सामान वापस नहीं लेकर आते है किसी तरह फिर से पैसे जोड़कर जूता पोलिस करना का सामान खरीदते है और फिर से अपनी रोजी रोटी और पेट पालने के लिए काम करना शुरू कर देते है।

छात्राओं को छेड़ते हैं बड़े व्यक्ति, लगाया उनके स्कूल जाने पर प्रतिबंध

बालकनामा ब्यूरो

लगभग 12 लड़कियों के माता पिता ने उनके स्कूल जाने पर लगाया प्रतिबंध इसलिए पत्रकार खुद इन लड़कियों से मिलने के लिए उनके घर पहुंचे और उनके माता पिता से मुलाकात की और उन्होंने बताया कि वे अपनी बेटियों को स्कूल भेजना चाहते है पर जिस रास्ते से उनकी बेटियां स्कूल जाती हैं उसी रास्ते में एक चमड़े की दुकान है। उस दुकान की छतो पर चढ़कर बड़े व्यक्ति उनकी लड़कियों को परेशान करते है व अश्लील बाते भी बोलते है। इसलिए वह अपनी लड़कियों का स्कूल से नाम कटवा रहे है अब वह घर में ही थोड़ा बहुत पढ़ाई करेंगी नही तो घर के कामकाज सीखेंगी। पत्रकार ने लड़कियों से भी बात चीत की तो 15 वर्षीय लड़की ने बताया कि दीदी हमें उस रास्ते से गुजरना भी बहुत मुश्किल होने लगा है बड़े व्यक्ति छत पर चढ़कर सीटी मारते हैं और बोलते है जो तुम्हारे अध्यापक स्कूल के अंदर पढ़ाई करवाते हैं उससे भी अच्छी पढ़ाई हम बाहर ही करा देंगे। पत्रकार ने लड़कियों से पूछा इस बारे में आपने अपने अध्यापक को बताया है ? 17 वर्षीय बालिका ने बताया कि हम लड़कियों ने अपनी अध्यापक को भी बताया था उन्होने पुलिस थाने में इन बड़े व्यक्तियों के खिलाफ शिकायत दर्ज की

है। पर पुलिस के आने से पहले ही वह भाग जाते है। क्योंकि इन बड़े व्यक्तियों का कोई एक ठिकाना नही है यह दिनभर इधर उधर घूमते रहते है और हम जैसी लड़कियों को परेशान करते है। हमारे माता पिता ने कितने मुश्किलों से स्कूल में दाखिला करवाया था लेकिन इन बड़े व्यक्तियों की वजह से हमारा स्कूल जाना बंद हो गया है। मात पिता ने कहा कि अब उनकी लड़कियां स्कूल नही जायेंगी ए घर में काम करेंगी। लेकिन यह लड़कियां स्कूल नही छोड़ना चाहती हैं एवं अपनी पढ़ाई को पूरा करना चाहती हैं और चाहती है कि जो बड़े व्यक्ति लड़कियों को परेशान करते है उन्हें कड़ी से कड़ी सजा मिले।

वस्त्र जलाकर बनाते हैं खाना

बातूनी रिपोर्टर कैलाश रिपोर्टर शम्भू

पत्रकार ने बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रूप मींटिग किया मीटिंग के दौरान बच्चों ने बताया कि भईया हम बच्चो को बहुत बड़ी परेशानी है कि हम दिनभर इधर उधर लक्कड़ बीनने के लिए जाते है तब जाकर हमारे घर में खाना बन पाता है। अगर हम बच्चे एक दिन भी लकड़ी बीनने के लिए नहीं जाते है तो हमारे घर में खाना नहीं बनता है और लकड़ी भी बहुत मुश्किल से मिलती है। यदि हम बच्चे किसी पेड़ पर चढ़ते है तो गिरने का भी डर रहता इसलिए जो पेड़ नीचे झूका होता उसी पेड़ से लकड़ियां काटकर लाते है। क्योकि पार्क में लकड़ी बीनने के लिए जाते है तो गार्ड मारने के लिए दौड़ते है।

लेकिन दुख कि बात यह है इतनी मेहनत करने बाद भी हमारी लकड़िया कोई चोरी कर लेता है। जब भी लकड़ियों को घर पर रखकर कहीं बाहर जाते है वापस आने तक कोई हमारी लकड़ियां उठाकर ले गया होता है। दिनभर हम बच्चे मेहनत करके लकड़ियों का इंतजाम करते है दिनभर की मेहनत पर पानी फिर जाता हैं। इसलिए हमारे माता

पिता खाना बनाने से परेशान हो जाते है कि कैसे वह अपने बच्चों को खाना बनाकर खिलाएंगे। कभी कभी तो जब हमारे माता पिता काम पर से वापस आते है तो हम बच्चों पर ही गुस्सा करते है कि तुमलोग लकड़ियां बीनने के लिए गये ही नही होंगे। रोज रोज लकड़ियां कौन चारी करके ले जाता है। जिस दिन लकड़िया सारी की सारी चोरी हो जाती है उस दिन हमारे माता को जो वस्त्र हम पहनते है वही वस्त्रों को जलाकर ही खाना बनाते हैं।

ढोंगी बाबा

बालकनामा ब्यूरो

जग जीवन नगर में रहने वाले बच्चे अंध विश्वास का शिकार हो रहे है वहां पर एक ढ़ोगी बाबा है जो जादू टोना जानता है जग जीवन नगर में कोई भी बच्चा या बच्चे के माता पिता बिमार होते है तो डांक्टर के पास जाने के बजाए वह उस ढ़ोगी बाबा के पास जाते है। बच्चों का कहना है कि पहले वह बाबा इधर उधर से मांगकर अपना गुजारा करते थे लेकिन कुछ सालों से गांव में ही कब्जा कर रखा है। वह बाबा एक व्यक्ति का 300 रुपए लेता है। बाबा बोलता है कि आपके घर में भूतो का बसेरा है इसलिए आपलोग बार बार बिमार हो रहे हो और अगर आप अपने घर से भूतो को नही भगाओगे तो वह आप लोगो को मार देगा इसलिए आपको हवन करना पड़ेगा। वह बाबा एक घर में हवन करने लिए कम से कम तीन हजार रुपए लेता है। 14 वर्षीय बालक ने बताया अभी तक वह बाबा पांच घरो में हवन कर चुका है पर आज तक कुछ नही हुआ है जो लोग बिमार होते है वह उस बाबा की बात सुनकर और बिमार हो जाते है फिर जब डांक्टर से दवाई लेते है तो थोड़ा ठीक होते है। बच्चों के माता पिता बाबा के पास जाते है और बोलते हैं कि बाबा आपका जादू टोने से तो हम लोग ठीक नही हुए जब हमने डांक्टर से दवाई ली तब जाके ठीक हुए। बाबा बोला कि नही वह डांक्टर की दवाई से तुम्हारा बिमारी ठीक नही हुआ है मेरा जादू टोना से ठीक हुआ है। 15 वर्षीय बालिका ने बताया कि हम बच्चे यह चाहते है कि इस ढोंगी बाबा से हमारे गांव को मुक्ति मिल जाए नही तो हमारे माता पिता बर्बाद हो जाएंगे।

छोटी उम्र में माता पिता ने सिखाया नशा करना

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने दक्षिणी दिल्लीए आगरा में दौरा किया तो पता चला कि जो छोटे बच्चे झुग्गी झोपड़ी या पुल के नीचे रहते है उन बच्चों के माता पिता खुद तो नशा करते है। साथ ही साथ उनका अपना बच्चा जब पांच साल का हो जाता है तो उसे भी वह नशा करना सिखा देते है। कुछ माता पिता नशा खरीदने के लिए अपने बच्चों को भीख मांगने के लिए भेजते है। बच्चे पुरे दिन कमाई करके जो पैसे लाते हैं उनके माता पिता उन पैसो से शराब खरीदकर ले आते हैं और रात को पार्टीकर शराब पीते हैं और साथ में अपने बच्चों को भी शराब पीलाते है। बच्चों का कहना है कि उनके माता पिता का व्यहार भी ठीक नहीं है क्योंकि वह अपने बच्चों को भी छोटी उम्र में नशो की बुरी लत में फंसा देते हैं। जब उनके बच्चे बड़े होने लगते हैं तो उनकी तकलीफ बढ़ने लगती है। शराब पीने के बाद सर घुमने लगता है उलटी आने लगती है। जब किसी दिन उन बच्चों को भीख नही मिलती तो उनके

माता पिता बच्चों मारते है। आगरा में रहने वाले बच्चों में पाया गया है कि जब बच्चे भीख मांगने से मना करते है तो उनके माता पिता उन्हें कबाड़ा बीनने के लिए भेजते हैं। क्योंकि उन्हें किसी भी हाल में शराब चाहिए ही चहिए नही तो घर में हंगाम मचाने लगते है। बच्चों ने बताया कि आगरा की एक छोटी से गांव आजमपाड़ा में लगभग 60 बच्चे ऐसे है जो अपने माता पिता के साथ बैठकर शराबए शिगरेटए गुटका का सेवन करते है इसलिए इन बच्चों की मानसिक स्थिती पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है।

अतुल का संघर्ष

बातूनी रिपोर्टर अतुल रिपोर्टर शम्भू

अतुल 13 साल का है। वह अपने माता पिता के साथ बिहार के एक छोटे गांव बिरौल में रहता है। उसके दो भाई बहन है। उसके पापा कोलकाता में काम करते है। मम्मी गांव में खेतीवाड़ी का काम करती है। अतुल सरकारी स्कूल में तीसरी कक्षा में पढ़ाई करता है। वह छोटी उम्र से ही घर की जिम्मेदारी उठा रहा है। जब मक्का और गेंहू का सीजन चलता तो वह मक्का का खेतो में काम करता है। छोटे छोटे मक्का के पेड़ पौधे पर कुदाल से मिट्टी चढ़ाता है। एक मक्का के पौधे पर मिट्टी चढ़ाने के दो रुपए मिलते है। उससे वह घर का खर्चा आराम से चला पाता है। अतुल ने बताया कि उसके गांव में यह नियम है कि जब भी बच्चा थोड़ा बड़ा हो जाता है तो उसके माता पिता उसे काम करने के लिए भेज देते है। उसके जैसे बहुत से बच्चे है जो इस तरह के काम करते है। जो वो पैसा कमाता है उससे उसके घर का राशन लाया जाता है। पापा कोलकाता से जो पैसा भेजते है उस पैसे से दादा दादी का ईलाज होता है।

शादी पार्टी का काम कर रहे छोटे बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

लाल डिग्गी गावं में 70 ऐसे बच्चे है जिनकी उम्र 12 से 17 साल है यह छोटे मासूम बच्चे शादी पार्टी के काम करने के लिए जाते है। पत्रकार ने इन बच्चों से बातचीत की तो 15 वर्षीय बालक ने बताया कि हम बच्चे अपने मर्जी से शादी पार्टी में काम करने नहीं जाते है बल्कि हमारे माता पिता भेजते है क्योंकि हमारे माता पिता कुछ भी काम नही करते है अगर कभी कभी इनका मन होता है तो चमड़े की छटाई का काम कर लेते हैं। अभी शादी का सीजन चल रहा है इसलिए हम बच्चे शादी पार्टी में काम करते है नही तो मौसम के अनुसार काम करते लेते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि शादी पार्टी में क्या काम करते हो ? बच्चों ने बताया कि हम शादी पार्टी में बर्तन धोने एवं तंदूरी रोटी बनाना या वैटर का काम करते हैं। और बच्चों ने बताया कि शादी पार्टी में काम करते वक्त हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है जब कभी कोई बर्तन टूट जाता है तो हमारे जो पगार देते है उस में से पैसे काट लेते है। ऐसे एक शादी पार्टी में काम करने का 100 से 200 रुपए देते है। शाम चार बजे से लेकर रात को दो बजे तक काम करना पड़ता है। पत्रकार ने बच्चों से पूछा शादी पार्टी के काम में आप छोटे बच्चों को ही क्यों ले जाते है ? 17 वर्षीय बालक ने बताया कि हम छोटे बच्चे को वह लोग कम पैसे देते है और वह भी हमारी मजबूरी को जानते है कि हम बच्चे किस प्रकार अपना जीवन गुजार रहे है। इसलिए हमारा गलत फायदा उठाते है क्योंकि जब किसी बड़े व्यक्ति से शादी पार्टी का काम करने बोलेंगे तो वह बहुत पैसे मांगेगा इसलिए वह हम बच्चों से काम लेते है।

कक्षा के लीडर छोटे बच्चों को दिखाते हैं अपनी दादागिरी

बालकनामा ब्यूरो

15 वर्षीय बालक ने बताया कि हमे हमारा लीडर डरा धमका कर रखता है। हमें जब शौचालय जाना होता है तो शौचालय नही जाने देता है ए हर वक्त गाली गलौज से बात करता है। बच्चे अपने लीडर से बोलते है कि वह इस तरह का व्यहार न करें। लीडर बोलता है कि चूप रहो नही तो स्कूल से बाहर निकाल दिए जाओगे। हमारी अध्यापक इसे देखकर भी अंदेखा कर देती है। बच्चों ने बताया कि ऐसा कोई दिन नहीं गया होगा जिस दिन हमने अपने लीडर से पीटाई नहीं खाई होगी। इस बारे में बच्चों अपने माता पिता से भी शिकायत करते है तो उनके माता पिता अध्यापक जी से मुलाकात कर उनसे बोलते है कि हमारे बच्चों के साथ लीडर इस तरह का व्यहार क्यो करता है। अध्यापक उनके माता पिता से बोलते है कि लीडरो का कसूर नही है बच्चे सही से पढ़ाई नही करते है इसलिए उन्हें मारते है। लीडर तुम्हारे बच्चों को भविष्य बनाने के लिए ही मारता हैं अगर तुमको अपने बच्चे पर ज्यादा दया आती है तो स्कूल क्यों भेजती हो घर में रखा करो।

बड़े लड़के करते हैं चोरी, लगता है इल्जाम मासूम छोटे बच्चों पर

बालकनामा ब्यूरो

बदरपुर बोर्डर के पास एक बस्ती में पत्रकार ने बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रूप मींटिग किया मींटिग के दौरान पता चला कि इस बस्ती में छोटे बच्चे की जनसंख्या अधिक है। उप बच्चो में से कुछ बच्चे दिनभर इधर उधर कबाड़ा बीनते है और यहां पर रहने वाले बड़े लड़के चोरी करते है जब पुलिस छानबीन करने आती है तो जो छोटे बच्चे कबाड़ा बीनते है उन पर चोरी करने का आरोप लगाती है और पुलिस वाले भईया हम छोटे बच्चों को जबरदस्ती मारते पीटते है। 15 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया हम सिर्फ कबाड़ा बीनने का काम करते है पर कोई गलत काम नही करते है। लेकिन जब हम बच्चों को कुड़ा नहीं मिलता है तो हम बच्चे खाली बोरी लेकर वापस घर आ जाते है पर किसी व्यक्ति का सामान नही उठाते है चोरियां तो यह बड़े लड़के करते है और पुलिस वाले भईया से बचने के लिए हम छोटे बच्चे पर इल्जाम लगाते है ताकि इन पर कोई शक न करे। 16 वर्षीय बालक ने बताया कि यह लोग स्कूल की वर्दी पहनकर बस में चढ़ जाते है पब्लिक की जेब काटते है और इसलिए बस ड्राईवर बदरपुर बोर्डर के बस स्टोप पर जल्दी बस नही रोकते हैं। बड़े लड़के स्कूल की वर्दी मार्किट से खरीदकर ले आते है और उसे पहनकर चोरी करने के लिए निकल पड़ते हैं। वह स्कूल की वर्दी पहनाकर इसलिए चोरी करते है ताकि चोरी करते समय अगर वह पकड़ा जाए तो लोग उसे आसानी से पहचान नहीं सकेंगे कि वह स्कूल वर्दी में स्कूल का छात्र है या चोर।

वातावरण जैसा छोटे बच्चे सीखते हैं वैसा

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने दक्षिण दिल्ली ए पश्चिमी दिल्ली और नोएडा में दौरा किया तो पता चला कि लगभग 250 ऐसे बच्चे है जो दिनभर जुआ खेलने में लिप्त रहते है। पत्रकार इन बच्चों से मिला और यह जानने की कोशिशा की कि यह बच्चे इतनी छोटी उम्र में जुआ खेलना कैसे सीख गये ?

15 वर्षीय बालक ने बताया कि भईया हम बच्चों के घर के आस पास का वातावरण ठीक नही है यहां पर अक्सर लोग दिनभर जुआ खेलते रहते है इनको देखकर बच्चे भी जुआ खेलना सीख गये है। अधिकतर दक्षिण दिल्ली के बच्चे जुए की लत में उलझे पाए गए। बच्चे अपना स्कूल छोड़कर जुआ खेलने लग जाते है और पढ़ाई करने स्कूल नही जाते है। अपने माता पिता से बोलते है कि आज स्कूल की छुट्टी है। और घर पर भी जुआ खेलते है। इन बच्चों के माता पिता कामकाज में लिप्त रहते है इस वजह से अपने बच्चों का पूरी तरह से ख्याल नही रख पाते। 15 वर्षीय बालिक ने बताया कि यहां पर बच्चे जुआ खेलने के लिए गलत कदम भी उठा लेते है। बच्चे अपने घरो का सामान बेच देते है और उससे जुआ खेलते है। जो बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जाते है वह अपने माता पिता को पैसे नही देते। 17 वर्षीय बालक ने बताया कि यह बच्चे अपने आस पास का माहौल देखकर जुआ सीख गए हैं अगर यह वातावरण सही रहेगा तो बच्चे कभी गलत नही सीखेंगे।

अगर मिले रहने का ठिकाना तो कर पायेंगे बच्चे पढ़ाई

बातूनी रिपोर्टर बल्ले रिपोर्टर शम्भू

पत्रकार कुछऐसे बच्चों से मिला जिनके माता पिता मजदूरी का काम करते है इन बच्चों के माता पिता बिहार में रहते है। वहां पर काम न होने की वजह से अलग अलग जगह पर काम करने के लिए जाते है इसलिए बच्चे पढ़ाई नही कर पाते है। 15 वर्षीय बालक जो पहले गांव में तीसरी कक्षा में पढ़ाई करता था वह अपने माता पिता के साथ दिल्ली आ गया। उसके माता पिता सड़क से संबंधित कार्य करते है। माता पिता ठेकेदार का काम करते हैं इनका अपना काम नही होता है। जिस जगह से काम के ठेके आते है वही जगह पर चले जाते है इसलिए इनके बच्चे पढ़ाई नहीं कर पा रहे है। 15 वर्षीय बालक ने बताया एक साल पहले हम बच्चे अपने माता पिता के साथ दिल्ली आये थे अब यह भी काम खत्म होने वाला है इसलिए बच्चे गांव जा रहे है। कुछ महीने से बच्चे संस्था के कार्यकर्ता के पास पढ़ाई करने जाने लगे थे लेकिन फिर कुछ दिनों के बाद कही से काम का ठेका आएगा तो बच्चों को जाना पड़ेगा। सभी बच्चों ने पत्रकार बोला कि जब तक हमारे माता पिता को काम का मुस्ताकिल ठिकाना नही मिल जाता तब तक बच्चे पढ़ाई नहीं कर सकते।

कुत्ता बना स्टेशन पर रहने वाले बच्चों का साथी

बातूनी रिपोर्टर सलमान रिपोर्टर शम्भू

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर लगभग 26 बच्चे ऐसे है जो काफी सालो से रहते है। यह बच्चे घर जाना नही चाहते है। जब भी कोई इन्हें घर जाने के लिए बोलता है तो यह बोलते है कि अगर हम बच्चे घर जाएंगे तो फिर से हमारे माता पिता हमारे साथ दुर्यव्यवहार करेंगे। इसलिए हम घर नहीं जाना चाहते। जब बच्चों से पूछा गया कि उनको अपने माता पिता की याद नहीं आती है ? तो 16 वर्षीय बालक ने बताया कि जो हमे दुख देता है वह कैसे याद आएगा। हमारे माता पिता से अच्छा एक कुत्ता है जो हम बच्चों का पूरी तरह से ख्याल रखता है इतना प्यार हमसे हमारे माता पिता ने भी नही किया होगा जितना यह कुत्ता हमसे प्यार करता है। हमारे माता पिता को हमेशा पैसा चाहिये होता है अगर हम बच्चे पैसे भी लाकर

देते है। फिर भी घर में लड़ाई झगड़ा होता रहता है। यह कुत्ता सिर्फ दो वक्त की रोटी खाता है और हमारे साथ दिन रात रहता है ए हम जहां जाते है ए यह भी हमारे साथ जाता है ए हमारी सुख दुख में साथ देता है जब हम बच्चे रात को सोते है तो वह हमारा और हमारे सामान का पूरा ध्यान रखता है।

पांच बड़े व्यक्ति छोटे बच्चे को करा रहे हैं गांजे का नशा

बातूनी रिपोर्टर सलमान रिपोर्टर शम्भू

14 से 16 साल के बच्चे हो रहे है नशे में लिप्त पहले यह बच्चे सिर्फ सुलेशन का नशा करते थे लेकिन अब इन बच्चों के जबरदस्ती गांजा का नशा कराया जाता है इन बच्चों से पत्रकार ने बातचीत की तो पता चला कि बच्चे अपने मर्जी से नशा नहीं करते हैं बल्कि पांच बड़े व्यक्ति बाहर से आते है जो इन्हें नशा करने के लिए प्रेरित करते है। जो बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए जाते है उनसे पहले यह लोग दोस्ती करते हैं और इनके साथ खेलते भी है। जब यह बड़े व्यक्ति गांजा का सेवन करते है तो इन बच्चों को भी नशा करने के लिए बोलते हैं। अगर ये बच्चे गांजा का सेवन नहीं करते तो कबाड़ा छीनने की धमकी देते है और मारपीट शूरू कर देते है 15 वर्षीय बालक ने बताया कि बच्चे चाहते है कि कैसे भी करके सुलेशन का नशा से छुटकारा मिल जाए। लेकिन यहां तो हम दूसरे अन्य नशे की ओर बढ़ते जा रहे है। बच्चों ने बताया कि एक कागज की पुड़िया में पैक होता है और उस गांजे को पीने पर अजीब सी

बदबू आती है। एक बच्चे ने अपने बारे में जिक्र करते हुए बताया कि एक दिन मुझे जबरदस्ती गांजा पीलाया तो मेरा सर घरूमने लगा और उलटी भी आई तब पता चला कि गांजे का नशा सुलेशन से ज्यादा खतरनांक है। बच्चे चाहते है कि कैसे भी करके इन पांच बड़े व्यक्तियों को यहां से भागा दिया जाए ताकि बच्चे नशे के चंगुल से बच पाए।

उठानी पड़ रही है अपने भाई बहन की जिम्मेदारी

बतूनी रिपोर्टर दुर्गा रिपोर्टर दीपक

16 वर्षीय दुर्गा जो कि लोरेन्स रोड की झुग्गी में अपने परिवार के साथ रहती है। यह लोग इसी झुग्गी में पिछले बीस वर्षो से रह रहे है। दुर्गा पांच भाई बहन है उसके माता पिता दोनो शराब पीते है। दुर्गा एक साल से काम कर रही है उसके पिताजी लोरेन्स रोड में कैनरा बैंक में फाईल की देखरेख का काम करते थे और माताजी दो कोठियों में काम करती थी। दुर्गा ने बताया कि उसके पिताजी को टी.बी की बिमारी है और वह बहुत शराब पीते है एक रात वह बहुत शराब पी लिये थे और उसके बाद टी.बी की दवाई भी खा ली दोनो चीज के एक साथ इस्तमाल करने की वजह से उनकी हालत बिगड़ गई। जब वह सुबह शौच करने के लिए गए तो शौचालय में ही उनकी मुत्यु हो गई। मुत्यु होने के बाद घर की परेशानी बढ़ गई। अब दुर्गा की माताजी कोठी में काम करती है और दुर्गा लन्च बॉक्स-की फैक्ट्री में 12 घंटे पेकिंग का काम करती है इस काम के दुर्गा को प्रतिमाह 6500 सौ रुपए मिलते हैं। इसके साथ साथ दुर्गा अपनी पढ़ाई ओपन बेस्कि एजुकेंशन से कर रही है। उसकी इच्छा है कि वह अपने भाई बहन का स्कूल में दाखिला करा दे ताकि उसके भाई बहन को उसकी तरह किसी फैक्ट्री में काम न करना पड़े।

छोटे कंधों पर परिवार की जिम्मेदारी

बातूनी रिपोर्टर खुशबू रिपोर्टर चेतन

खुशबू 9 साल की है जो कमला नेहरू कैम्प में रहती है। उसके परिवार में सात लोग है और पिता शराब पीते है। वह दिनभर इधर उधर घुमते रहते है कुछ भी काम नही करते है। खुशबू की माता जी अपने दो छोटे बच्चो की देखरेख करती है। उसका एक छोटा भाई सात साल का है जो दिनभर रेलवे लाइन की पटरियों पर खेलता रहता है। लेकिन दुख कि बात यह है कि खुशबू अपने परिवार के गुजारे के लिए कोठी में काम करती है। प्रतिमाह उसे दो हजार रूपए मिलते है जिससे कुछ दिनो तक घर का खर्चा चलता है। अगर खुशबू काम नहीं करेगी तो परिवार में सभी सदस्यों को

भूखा रहना पड़ जाता है। उसने बताया कि जब मैं पहले काम करने नहीं जाती थी तो हमारी माताजी और छोटे भाई बहन खाना खाने के लिए रोते रहते थे। इसलिए मैं एक आंटी से मिली जो एक कोठी में काम करने के लिए जाती है उन आंटी से गुजारिश की तब जाकर मुझे भी एक कोठी में काम पर लगा दिया है। अभी हमारे परिवार के लोग अच्छे से रह रहे है लेकिन मुझे बहुत काम करना पड़ता है। जब मैं कोठी से काम करके आती हूं तो मुझे बहुत थकावट महसूस होती है। इसके बाद भी घर का भी काम मुझे ही करना पड़ता है। मैं चाहती हूं कि किसी तरह मेरे पिताजी शराब पीना छोड़ दे ओर कोई अच्छा काम करने लगे ताकि हमारी घर की परेशानी दूर हो जाए।

आखिर कब तक रहें बच्चे सड़क पर?

बालकनामा ब्यूरो

जो बच्चे सड़क पर रहते है उन बच्चों को आए दिन किसी न किसी वजह से तकलीफ होती ही रहती है ऐसे ही यह खबर है पुल के नीचे रहने वाले बच्चों की। वहां पर पत्रकार ने देखा कि काफी पुलिस वाले भीड़भाड़ लगए हुए है और जो भी बच्चे पुल के नीचे रहते है उनके माता पिता से बोल रहे है कि यहां से अपना सामान उठा कर कहीं ओर ले जाओ। जिन बच्चो के परिवार वहां से नहीं जा रहे थे वह उनको जबरदस्ती पुल के नीचे से भगा रहे थे।

पत्रकार एक पुलिस वाले भईया से मिला और अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि मैं एक अखबार का पत्रकार हूं मैं यह जानना चाहता हूं कि यहां पर इतनी भीड़ क्यों है? और बच्चो को यहां से क्यों भगाया जा रहा है ? उन्होंने बताया कि इस पुल के नीचे से बड़े अधिकारी गुजरने वाले है इसलिए हमारी ड्यूटी यहां लगाई गई है। हम इन बच्चो को यहां से भगा रहे है। ताकि उनको सड़क पर रहते हुए कोई बच्चा नजर नही आए। 15 साल की बालिका ने बताया कि भईया जब भी

कोई बड़े अधिकारी इस पुल के नीचे से गुजरते हैं तो हम बच्चो के साथ ऐसा ही बर्ताव करते हैं या फिर पुरे दिन के लिए किसी दूसरे स्थान पर भेज देते है। जब बड़े अधिकारी यहां से गुजर जाते है तो फिर हम वापस आ जाते है। 17 वर्षीय बालक ने बताया कि सरकार हम बच्चों को सड़क पर देखना नही चाहती है इसलिए तो जब भी यहां से गुजरते है तो हम बच्चों को भगा देते है। अगर सरकार चाहती है कि हम बच्चे सड़क पर नही रहे तो बच्चों के लिए अच्छी जगह पर घर बना दे ताकि बच्चे उस घर में सुरक्षित रहे केवल सड़क पर रैन बसेरे बना देने से बच्चों की समस्या दूर नहीं होती है। आखिर हैं तो हम तब भी सड़क पर ही खाना बनाना ए नहाना धोना यह सब काम फिर भी बच्चों को सड़क पर या उसके किनारे ही करना पड़ता है।

सुभाष चाहता है मिले दुबारा स्कूल में दाखिला

बातूनी रिपोर्टर सुभाष रिपोर्टर दीपक

14 वर्षीय सुभाष अपने पविार के गुजारे के लिए चप्पल फैक्ट्री में काम करता है पत्रकार सुभाष को काम करते हुए देखा तो उनसे मिलने गए सुभाष ने अपनी परेशानियों के बारे में बताते हुए कहा कि मेरे घर में सभी लोग काम करते है मेरी माताजी घर में ही रहकर कपड़े सिलाई करती है ए पिताजी मजदूरी का काम करते है। पत्रकार के पूछने पर सुभाष ने हस्ते हुए कहा कि कैसी बात कर रहे हो मैंने चार महीने पहले ही अपना स्कूल छोड़ दिया है क्योंकि मेरे स्कूल की स्थिति ठीक नही है। लेकिन मैं अभी भी पढ़ाई करना चाहता हूं क्योंकि मेरा सपना है कि मैं भी पढ़ाई लिखाई करके एक अच्छा काम करूं ताकि मेरे माता पिता को मजदूरी नहीं करना पड़े और मेरे परिवार के सभी सदस्य खुश रहे। अभी मुझे फैक्ट्री में 12 घंटे काम करना पड़ता है जिससे पूरे दिन मेरे शरीर में दर्द रहता है मुझे यह काम करना बिल्कुल पसंद नहीं है क्योंकि यहां पर लोग हर वक्त गाली गलौज से बात करते है। मैं चाहता हूं कि मेरी मदद कोई करे ताकि मैं दुबारा स्कूल जा सकूं।

पत्रकार ने मुलाकात की (टी डी एच) मेंम्बर से

रिपोर्टर शम्भू

पत्रकार ने एक मीटिंग में भाग लिया उस मीटिंग में नेपाल में रहने वाले बच्चो के बारे में चर्चा हो रही थी उस चर्चा से पता चला कि नेपाल में अभी भी 500 बच्चे है जो सड़क पर रहते है वह अपने गुजारे के लिए होटल या ढ़ाबो में काम करते है इसको लेकर पत्रकार ने श्री श्याम श्रेष्ठ नेपाल के (टी.डी. एच,) संस्था के कार्यकर्ता से मुलकात की।

पत्रकार - नेपाल में सड़क एवं कामकाजी बच्चे किस स्थिति में रहते हैं ?

श्री श्याम श्रेष्ठ - भारत में सड़क एवं कामकाजी बच्चो की संख्या बहुत अधिक है लेकिन नेपाल में सड़क एवं कामकाजी

श्याम श्रेष्ठ जी से पूछे कुछ सवाल

बच्चों की संख्या लगभग 500 के करीब है।

पत्रकार - मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि नेपाल में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की जनसंख्या कम है। लेकिन यह चम्तकार कैसे हो गया ?

श्री श्याम श्रेष्ठ - नेपाल की सरकार बहुत अच्छी है वह गरीब बच्चों की पूर्ण मदद करती है और सड़क पर बच्चे न रहे उसके लिए वहां की सरकार बहुत सतर्क है। नेपाल की सरकार इन बच्चों के लिए अलग अलग जगहों पर सेंटर खुले हैं जिसमें बच्चे आराम से रहते है।

पत्रकार - सरकार बच्चों की पूरी तरह से सहयोग कर रही है तो 500 बच्चे भी सड़क पर क्यों है ?

श्री श्याम श्रेष्ठ - सरकार इन बच्चों को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग कर रही है। कुछ संस्था ऐसी है जो सरकार से पैसे लेती है पर पूरा योगदान नहीं कर पाती। इसलिए कुछ बच्चे अभी भी सड़क पर है।

पत्रकार - जो बच्चे सड़क पर है क्या वो नशा भी करते है ?

श्री श्याम श्रेष्ठ - जो बच्चे अपने घर से बाहर निकल जाते है वह थोड़ी गलत संगत में पड़ जाते है और नशा भी करते हैं। मगर जो भारत में बच्चे नशा उपयोग करते है वो वहां पर नहीं मिलता सिर्फ गुटखा ए सिगरेट आदि का नशा करते है।

माता पिता के दबाव में बच्चे कर रहे हैं गलत काम

बालकनामा ब्यूरो

लगभग 40 बच्चे जिनकी उम्र 10 से 15 साल तक है। इन बच्चों के माता पिता खुद नशीले पदार्थ बिकवाते है। इस बारे में जब छानबीन किया गया तो पता चला कि यह बच्चे बहुत मुश्किल में आ जाते है। चूंकि जिस जगह पर यह बच्चे नशा बेचने के लिए जाते है वहां पर पुलिस वाले काफी चेकिंग करते है। इनसे बचने के लिए माता पिता उन्हें यह सुझाव देते है कि जो कपड़े वह पहने होते हैं उसकी समीज और शर्ट में नशीला पदार्थ छुपाकर ले जाए। अगर कभी गलती से भी किसी बच्चे को पुलिस वाले भईया पकड़ लेते हैं तो उस बच्चे की बहुत पीटाई होती है। घर पर जाने के बाद उसके माता पिता भी उन बच्चो पर आत्याचार करते है। यह बच्चे एक डरी हुई जिंदगी जी रहे है। अगर बच्चे यह काम नही करेंगे तो माता पिता खाना पीना नही देंगे और अगर वो काम करते हुए पकड़े जाते है तो पुलिस वाले पिटाई करेंगे। बच्चों ने बताया कि नशा ज्यादातर ट्रक वाले ए रिक्शे वाले लेते हैं। दिनभर काम करने पर 200 से 300 तक की कमाई हो जाती है। 14 वर्षीय बालक ने बताया कि बच्चे पढ़ाई करना चाहते है पर उनके माता पिता स्कूल नही भेजते। अगर बच्चे स्कूल जाने की बात करते है तो उनके माता पिता बोलते है कि पढ़ाई लिखाई करके क्या होगा ?

छोटे भाई बहनों को भीख मांगने ना भेजें : प्रकाश

बातूनी रिपोर्टर प्रकाश रिपोर्टर दीपक व चेतन

प्रकाश अपने माता पिता के गलत व्यहार की वजह से एक कबाड़े की दुकान पर काम करने लगा क्योकि उसके माता पिता आए दिन घर में लड़ाई झगड़ा करते है उसके माता पिता उसके छोटे भाई बहन से भीख मांगवाते है अगर वह भीख मांगने नही जाते है तो घर से बाहर भगा देते है। प्रकाश ने बताया कि मुझे भी दो दिन यही बोल रहे थे कि हमारे पड़ोस में जो छोटे बच्चे है वह अपनी माता पिता को कमाकर खिलाते है पर मेरे बेटे ऐसे कहां है जो कमाकर खिलायेंगे ए दिनभर इधर ऊधर घुमते रहते है। प्रकाश ने बताया कि जब रात को शराब नही मिलती तो घर में गाली गलौज करते है। इसलिए मैं एक कबाड़े की दुकान पर गया और मालिक से काम पर रखने के लिए से गुजारिश की कबाड़े की दुकान पर काम मिलने के बाद वह कबाड़ा बीनने लगा। अब वह कबाड़े की दुकान पर भी काम करता है और सुबह आठ बजे चप्पलो की फैक्ट्री

में जाता है वहां से बचा हुआ कबाड़ा लाता है इस काम के उसे पुरे दिन में लगभग 150 रूपए तक कमा लेता है। और इसके साथ साथ बीच में अगर कभी शादी पार्टी का काम मिलता है तो वह बर्तन धोने का काम करने चला जाता है जो भी पैसे कमाकर लाता है वह अपने माता पिता को दे देता है प्रकाश इतनी मेहनत इसलिए करता है ताकि उसके माता पिता उसके छोटे भाई बहन को भीख मांगने के लिए ना भेजे।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

स्ट्रीट चिल्ड्रन सम्मलेन कार्यक्रम में संपादक की भागीदारी

स्ट्रीट चिल्ड्रन द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित बालकनामा का वितरण

अमर उजाला अखबार में कवरेज

बालकनामा की सम्पादकीय टीम की मीटिंग

स्ट्रीट टाक मैं हिस्सा लेने वालों का सिलेक्शन

स्ट्रीट टाक कार्यक्रम

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471